विवशता

नवीन जोशी

माँ तुम मेरे बगैर सोने की आदत डाल लो तो अच्छा है,
दुनिया के सामने मत रोना खुद को संभाल लो तो अच्छा है।
जब निकलूं घर का ख्याल न हो इतनी भी ग्वार न थी,
मेरा कुसूर बस इतना था मैं बलात्कार करवाने को तैयार न थी।
अब गाँव-शहरों में खूब मोमबत्तियां बेची जाएगीं,
और न जाने और कितनी प्रियकांएँ नौंची जाएगीं।
इस अपंग समाज में खुद को ढाल़ लो तो अच्छा है।

माँ तुम मेरे बगैर सोने की आदत डाल लो तो अच्छा है।
कुछ दिनों तक टेलीविजनों पर लंबे-लंबे भाषण सुनाएगें,
कुछ नेताओं के हाथों से कागज के टुकड़ें फेंके जाएंगे।
इनको सजा होने तक न जानें कितनी बेटियाँ जल जाएगीं,
ये सड़कों वाली मोमबत्तियां शयनकक्षों में सज जाएगीं।
आवाज मत उठाना सरकार से माल लो तो अच्छा है।

माँ तुम मेरे बगैर सोने की आदत डाल लो तो अच्छा है।
इनकी चुप्पी देखकर ये इंसान नहीं लकड़ी के खूँटे लगतें हैं,
ये बेटी बचाने-पढ़ाने वाले सारे नारे झूठे लगतें हैं।
तुम क्यों झूठी दिखावटी-मिलावटी शान की बात करते हो,
इन ओंछी हरकतों से ऊँचे हिन्दुस्तान की बात करते हो?
मेरी मौत पर यदि तुम्हें कोई मलाल न हो तो अच्छा है।

माँ तुम मेरे बगैर सोने की आदत डाल लो तो अच्छा है।

शोध छात्र, पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर